प्रातः क्लास 29/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप को याद करो। यह तो समझते हो रूहानी बाप ऊँच ते ऊँच है और सभी अनेक संबंधियों से वह न्यारा जरूर है। और ऊँच ते ऊँच है। ऊँच ते ऊँच पढ़ाते भी हैं। ऊँच ते ऊँच बाप है तो ऊँच ते ऊँच वरसा भी देते हैं। ऐसे बाप के सामने तुम बच्चे बैठे हो। यह तो जरूर याद आता होगा ऊँच ते ऊँच बाबा है। ऊँच ते ऊँच नई दुनिया का वरसा भी देते हैं। बच्चा भी बनाते हैं फिर पढ़ाते भी हैं, घर भी ले जाते हैं। जहाँ से फिर आपे ही स्थापन की हुई नई दुनिया में योगबल से माँ के गर्भ में प्रवेश करते हैं। बहुत मीठे ते मीठा, बहुत ऊँच ते ऊँचा है। सभी दुख दूर कर देते हैं। उनके एबजे में अपार सुख देते हैं। समझू सयाने बच्चे समझते हैं ऐसे बाप की पाठशाला में हम बैठे हैं। कितना सहज पढ़ाई पढ़ाते हैं। इसको कहा जाता है सहज बाप से योग। तुम्हारे सामने बैठे हैं ना। पढ़ाने वाले साथ योग नहीं लगावेंगे? आत्मा ही पढ़ती है इन ऑरगन्स द्वारा। सुनती भी आत्मा है कानों द्वारा। बाप भी इन मुख द्वारा समझाते हैं। इसलिए गऊमुख का भी देखो कितना गायन है। इसमें प्रवेश कर फिर इस माता द्वारा बच्चों को एडॉप्ट करते हैं। इसलिए कब कब माता का रूप भी बच्चों को दिखाई पड़ता है। ऐसे अनुभव बहुतों को होता है। सच2 माता समझ दूध भी पीने लग पड़ते हैं; परन्तु यह सभी है सा0। ईश्वर की युक्ति कही जाती है उनको। और कोई का भी ऐसा गायन नहीं है। एक ही परमपिता परमात्मा का यह चित्र है चरित्र है। माता भी बनते हैं और भविष्य विष्णु अथवा ल0ना0 का सा0 भी करते हैं। एमऑबजेक्ट दिखाने लिए बच्चों को सा0 कराया जाता है। तुम बच्चों को भी समझाते हैं यह तुम्हारा एमऑबजेक्ट है। फिर से तुमको यह बनना है। पुनर्जन्म कब से शुरू होता है? शुरू से। तुम बच्चों ने पुनर्जन्म लिया है, स्मृति आई है। हर बात की तुमको स्मृति दिलाते हैं। पहले2 तुम सो देवता थे। फिर कैसे सीढ़ी उतरे। फिर अभी सो देवता बनते हो। जो पहले2 जन्म में आये होंगे वही 84 जन्मों के चक्र में आवेंगे। पहले नम्बर में प्रिन्स श्री कृष्ण था। फिर भिन्न2 नाम–रूप धर कर वह इस समय यह है। तुम भी फिर से सो राजकुमार बनते हो। तुम बच्चों की बुद्धि में है वह ऊँच ते ऊँच भगवान है। वही ऊँच ते ऊँच पढ़ाई पढ़ाने वाला है। पतित–पावन है। यह स्मृति में रखना है। इसमें मुँझने की कोई बात ही नहीं। बाप श्रीमत देते हैं मीठे2 बच्चों तुम्हारी आत्मा को पतित होने से शरीर भी पतित होता है। तुम्हारी आत्मा 24 कैरेट कंचन थी तो शरीर भी कंचन था। यह दुनिया ही कंचन थी। अर्थात् प्युरिटी में थी। विचार करो हमारा बेहद का बाप ऊँच ते ऊँच नालेजफुल भी है। हमको ऐसा पढ़ाते हैं जो और कोई पढ़ा न सके। न कोई अपना परिचय ही देंगे कि मैं कैसे आता हूँ। बाप कहते हैं इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर आने मैं ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ। इस साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। वह भी बहुत जन्मों के अन्त में। बहुत जन्मों के अन्त का जन्म होगा ही श्रीकृष्ण का। इसमें मुँझने की बात ही नहीं। बच्चे जानते हैं ऊँच ते ऊँच बाप है। वह है बड़ा बाप, यह छोटा बाप। वह रचयिता है यह रचना। वह तो एक ही बेहद का रचयिता है। बाकी यह सभी हैं हद के रचयिता(लौकिक बाप)। बेहद के बाप को सभी बाबा बाबा कह पुकारते हैं। ऊँच ते ऊँच मंदिर भी उनका है। अक्सर करके शिव का मंदिर ऊँच पहाड़ पर ही दिखाते हैं। यहाँ भी बहुत ऊँची पहाड़ी पर मंदिर बनाया हुआ है। जिसको गुरुशिखर कहते हैं। यहाँ तपस्या करते हैं, वहाँ सूक्ष्मवतन। और वह है मूलवतन। जहाँ बाप के साथ तुम भी रहते हो। तो बाप कितना अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। रोज़2 समझाना पड़ता है जब तक देवताओं का झाड़ वा ब्राह्मणों का झाड़ फुल स्थापन हो जाये। यह प्रजापिता ब्रह्मा है ना। तुम हो ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। एडाप्टेड हो माता से। बच्चे सा0 भी करते थे। फिर बन्द कर दिया; क्योंकि जादू2 समझ लेते थे। बाप कहते हैं नथिंग न्यू। हूबहू कल्प पहले मिसल हो रहा है। बाप तो एकदम ही निशफुण रहते हैं। हर 5000 वर्ष बाद मैं आता हूँ। इतना ऊँच ते ऊँच बड़ा बाबा जरूर इतनी बड़ी जागीर देंगे। तुमको विश्व का मालिक बनाने की युक्ति बताते हैं। उस बाप से ऊँचा तो कोई है नहीं। सभी आत्माओं का बाप वह एक है। तो अब बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ कर बैठो।

बेहद का बाप आकर बेहद का वरसा देते हैं। आधा कल्प तुम सुख में रहते हो वह है दिन। धक्का खाना नहीं होता है। फिर आधा कल्प है रात। भक्तिमार्ग में धक्के खाने पड़ते हैं। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। ऊँच ते ऊँच शिवबाबा जिसको भक्तिमार्ग में हम पुकारते आये हैं कि आकर दुख हरो। दुखधाम से सुखधाम में ले चलो। बाप कहते हैं दुखधाम और सुखधाम का यह तुम्हारा चक्र है। बहुत ही सहज रीत समझाते हैं। रावण के ऊपर गदहे का सीस दिखाते हैं ना। बाप जानते हैं कितने टटू बुद्धि बन पड़े हैं। रावण ने क्या बना दिया है। इसलिए यह निशानी दी है। 5 विकार स्त्री में, 5 विकार पुरुष में है। सतयुग में तो रावण राज्य होता ही नहीं। तो बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों बाप भी बहुत मीठा है। बाप समझाते हैं यह सुख दुख का खेल है। आधा कल्प तुम विषय सागर में गिरते आये हो। दुख वृद्धि को पाता जाता है। सतोप्रधान से तुम तमोप्रधान बन जाते हो। महसूस करते हो बाबा बिल्कुल राइट बतलाते हैं। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। इसको कहा जाता है अंधेर नगरी.....सर्वव्यापी ईश्वर कह देते हैं। कहाँ ईश्वर बाप, कहाँ यह तमोप्रधान मनुष्य। कुछ भी समझते नहीं है। अभी बाप समझाते हैं मुझे याद करने से तुम पावन बनेंगे; परन्तु यह युद्ध का मैदान है। इसमें ही तुमको माया हराती है। तुम याद करते हो माया भुला देती है। बाप कहते हैं है तो बहुत सहज। बाप को जानकर फिर भूल सकते हैं क्या! बाप तो बहुत ही सहज बतलाते हैं। अपन को आत्मा समझो। शिवबाबा को याद करो। भक्तिमार्ग में भी शिवबाबा की याद करते हैं ना। बनारस में शिव का कितना मंदिर है। बनारस में रुद्र यज्ञ भी रचते हैं। बहुत शालीग्राम बनाते हैं। फिर सेठ चाहे तो लाख की पूजा करावे चाहे दो लाख की करावे। इतने शालीग्राम बनाते हैं। शिव तो एक ही बनाते हैं। फर्स्ट क्लास मिट्टी मंगाते हैं। रोज बनाते हैं और तोड़ते हैं। पूजा आदि कर हवन आदि आकर करते हैं। फिर दक्षिणा भी मिलती है। जितना शालीग्राम बनावेंगे इस हिसाब से जांच होती है। बनारस से खास पंडित लोग आते हैं लाख बनानी होगी तो बहुत ब्राह्मण मंगावेंगे। थोड़े बनाने होंगे तो ब्राह्मण भी थोड़े। दक्षिणा भी थोड़ी मिलेगी। यह है गुड्डिडयों का खेल। बनाना, पूजा करना और फिर तोड़ देना। अभी तुम समझते हो ना क्या2 करते रहते हैं। बन्दर की भी पूजा होती है। यहाँ बहुत हनुमान के भक्त होंगे। हनुमान को समझा है महावीर है। वास्तव महावीर–महावीरणियाँ तुम हो। योगबल से तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। तूफान तो भल आये। महावीर कब ऐसे नहीं कहेंगे कि बाबा हम भूल जाते हैं। याद करने का टाइम नहीं मिलता। बाबा कहते हैं भल तुम कहाँ भी जाओ, घूमो–फिरो, क्या तुम शिवबाबा को याद नहीं कर सकते हो। कोई किसको कोई किसको याद करते होंगे। मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ तुम मुझे याद नहीं कर सकते हो? कहते हैं बाबा घड़ी2 भूल जाता हूँ। यह है लड़ाई। बहुत मीठे ते मीठा बाप है। कितना ऊँच ते ऊँच पद देते हैं। ज्ञान कटारी, ज्ञान तलवार नाम से फिर देवियों को वह हथियार दे दिये हैं। काली देखो कैसे बनाई है। कितनी काली और भयंकर सिकल है। देवियाँ कोई ऐसी हिंसक थोड़े ही होती हैं। काली माता नाम रख दिया है। कोई अफ्रीका का थोड़े ही है। अफ्रीका से भी जास्ती काली है। माँ माँ करके कैसे काली पर बन देते हैं। क्या2 बातें बतलाते हैं। यह करो तो ऐसा होगा। भारत की गवर्मेन्ट भी है तमोप्रधान। भल वह भी तमोप्रधान है; परन्तु इतना नहीं जितना यह भारतवासी हुए हैं। उन्होंने इतना सुख नहीं देखा है तो इतना तमोप्रधान भी नहीं बने हैं। वहाँ से ही सभी सीखकर आते है। कितनी सांइस की इन्वेशन निकली है। आगे यह बत्तियाँ आदि थोड़े ही थी। शमा जलाते थे। गैसे बिजली आदि कुछ भी नहीं थी। वायसराय आदि भी घोड़ेगाड़ी पर आते थे। मोटरे आदि भी कुछ नहीं थी। बाबा के लाइफ में ही यह सभी कुछ हुआ है। इतनी महंगाई भी बाबा के लाइफ में हुई है। बाबा तो अनुभवी है ना। 12 आने मन जवार–बाजरे आदि बेचते थे। अभी तो देखो क्या हो गया है। कितना फर्क आ गया है। यह बाबा का पुराना अनुभवी रथ है। लोयेस्ट से लेकर हाईस्ट से कनेक्शन में आये हैं। (पास्ट की हिस्ट्री सुनाना) तो बाप ने भी आकर इस रथ को स्वीकार किया है। शिवबाबा कहाँ है? तुम कहेंगे इनके बाजू में यहाँ(भृकुटि) बैठे हैं। वन्डर है ना (अधूरी मुरली)